परिशिष्ट 9

(पवित्र आत्मा)
पवित्र आत्मा मसीहियों को उनके कष्टों के बीच में सम्भालता है

रोमियों 8:26–27 मसीहियों में परमेश्वर के कामों का वर्णन किया गया है।

अनुवाद। **8:26,** और इसी तरह से पवित्र आत्मा हमेशा हमारी कमज़ोरियों में सहायता करने(हाथ बढ़ाने)के लिए आता है। क्योंकि हम नहीं जानते हैं कि जिस तरह से प्रार्थना करनी चाहिए वह कैसे की जाती है, लेकिन आत्मा हमारी ओर से *लगातार* निःशब्द आहें भर भर के (जिसे शब्दों में बयान करने से बाहर है) प्रार्थना करता है। **8:27** और जो *लगातार* हमारे हृदयों को जांचता है वह आत्मा की मनसा को जानता है, क्योंकि आत्मा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार लगातार सन्तों के लिए प्रार्थना करता है।

इसी तरह से का मतलब है, जिस प्रकार से आने वाले समय में महिमित भविष्य की आशा मसीहियों को *वर्तमान कष्टों* का सामना करने का बल प्रदान करती है, उसी प्रकार पवित्र आत्मा उसकी *वर्तमान कमजोंरियों* में सहायता करता है।

दुर्बलताएं किसी भी प्रकार की दुर्बलताएं हो सकती हैं: या तो इस टूटे संसार की सामान्य तकलीफें या फिर यीशु के खातिर सताव। वे परीक्षाएं भी हो सकती हैं(इब्रानियों 4:15) या शरीर में लगे हुए कांटे (2 कुरिन्थियों 12:5)। किसी भी प्रकार की दुर्बलता में मसीहियों को प्रार्थना करने के लिए नहीं रोका गया है।

पवित्र आत्मा की निरन्तर सहायता के द्वारा मसीहियों को दुर्बलता और क्लेशों में सम्भाला जाता है। पवित्र आत्मा बड़ी दीनता के साथ मसीहियों के बोझों और दुःखों को अपने ऊपर ले लेता है उनकी सहायता करता है।

मसीहियों के जीवन में बहुत सी नैतिक व आत्मिक असफलताएं होती हैं(रोमियों अध्याय 7), जिसकी वजह से उसे जो काम या प्रार्थना करनी चाहिए वह नहीं कर पाता। मसीहियों को सदैव ही इस बात का पता नहीं होता कि उसे क्या प्रार्थना करनी चाहिए अर्थात उस समय पर क्या प्रार्थना करनी चाहिए। हालांकि व सामान्य तौर पर प्रार्थना करना जानता है ले(मत्ती 6:9–13; कुलुस्सियों 1:9–12),लेकिन उसे किसी खास जरूरत के समय,कठिनाई और परिस्थिति में प्रार्थना करना नहीं आता है। वह नहीं समझ पाता कि प्रार्थना में बोले गये शब्द परमेश्वर की मनसा से मेल खा रहे हैं या नहीं (2कुरिन्थियों 12:7–10; फिलिप्पियों 1:22–24; 1 यूहन्ना 5:14)। कई बार मसीहियों को अपने मन के भीतर छुपी ज़रूरतों के बारे में भी पता नहीं रहता। इसी कारण वह उन ज़रूरतों को अपनी प्रार्थनाओं में व्यक्त नहीं करते या कर नहीं पाते।

प्रार्थना परमेश्वर (पिता) से की जाती है(मत्ती 6:9)। परमेश्वर हृदय को जाँचता है(यिर्मयाह 17:10; प्रकाशितवाक्य 2:23)। पवित्र आत्मा मसीहियों के हृदय में वास करता है(1 कुरिन्थियों 3:16) और विश्वासी की वास्तविक ज़रूरत को जानता है। और परमेश्वर हमेशा पवित्र आत्मा की मनसा का पहिचानता है। पवित्र आत्मा परमेश्वर का आत्मा होता है और हमेशा परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार हर अहम ज़रूरत के लिए प्रार्थना करता है।

मसीही अपनी ज़रूरतों को शब्दों में बयान नहीं कर सकते, क्योंकि वे ऐसा करना जानते ही नहीं और वे अपनी ज़रूरतों को बता ही नहीं पाते।

मसीही बातों में अपनी ज़रूरतों को व्यक्त नहीं करते, क्योंकि उसे पता ही नहीं होता कि उसके जीवन में वे ज़रूरतें हैं।

एक सच्चे वकील या सहायक के रूप, पवित्र आत्मा मसीही जन की असल ज़रूरत को पहिचानता है और परमेश्वर से उन ज़रूरतों के पूरा होने के लिए प्रार्थना करता है।

पाँच प्रमुख बातों का अवलोकन किया गया हैः

पहला अवलोकनः पवित्र आत्मा मध्यस्थता करता है प्रार्थना करने वाला मसीही नहीं।

कई मसीही लोग इन आयतों के बारे में कहते हैं कि ये आयतें बताती है कि मसीही लोग परमेश्वर से किस प्रकार प्रार्थना करते हैं। वे कहते हैं कि पवित्र आत्मा उनसे बड़ी आहें भर भर के प्रार्थना करवाता है अर्थात चाह,इच्छा, भावों के साथ प्रार्थना करवाता है, जिन्हें शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता, जिन्हें आप सुन तो सकते हैं परन्तु आप समझ नहीं सकते। वे कहते हैं कि पवित्र आत्मा उन्हें प्रार्थना के लिए शब्द प्रदान करता है और बताता है कि उन्हें अपनी प्रार्थनाओं और निवेदनों को किस प्रकार रखना हैः चाहे वे बुद्धिजीवी बातें हो या अबोध बातें हों। इस प्रकार की व्याख्या से एक बात आसानी से समझ में आती है कि मसीही लोग आहें भर भर के शोर मचाते हुए प्रार्थना करते हैं और कहा जाता है कि पवित्र आत्मा उनमें होकर प्रार्थना कर रहा है। इसकी वजह से मसीही लोग ऐसा भी सोचने लगे हैं कि परमेश्वर के सामने सबसे ज्यादा ग्रहण योग्य प्रार्थना अबोध भाषा में प्रार्थना हैं। दूसरे मसीही लोग इस प्रकार की प्रार्थना को 'अन्यान्य भाषा में प्रार्थना के नाम से जानते हैं(1 कुरिन्थियों 14:14–17), जिसे संयोग से लोगों की रीति से प्रार्थना कहा गया आत्मा की रीति से प्रार्थना नहीं।

सही बात यह है कि पवित्र आत्मा स्वयं हमारे लिए मध्यस्थता करता है। प्रमुख बात यह नहीं है कि मसीही लोग किस तरह से प्रार्थना करते हैं परन्तु *पवित्र आत्मा* किस प्रकार मसीहियों के लिए परमेश्वर से मध्यस्थता करता है। मनुष्य प्रार्थना *नहीं करता* बल्कि पवित्र आत्मा मध्यस्थता करता है। परमेश्वर द्वारा मनुष्यों की प्रार्थना का उद्देश्य नहीं वरन आत्मा की प्रार्थना की मनसा को पहिचाना जाता है। परमेश्वर मनुष्यों की प्रार्थनाओं में कराहने को नहीं परन्तु आत्मा की कराहट को सुनता है (8:27)।

दूसरा अवलोकन : आत्मा की मध्यस्थता(8:27) मसीह की मध्यस्थता के समान है(8:34)।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में, *आत्मा मसीह का पक्ष लेने वाला है,* जो धरती पर रहने वाले मसीहियों पर यीशु मसीह और उसके विचारों और उसकी इच्छाओं को प्रगट करता है (यूहन्ना 14:16–17,26; 16:14रोमियों 8:9–10)। लेकिन रोमियों की पुस्तक में *पवित्र आत्मा मसीहियों को सहायक है,* जो मसीहियों और उनकी जरूरतों को स्वर्ग में परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करता है(8:34; इब्रानियों 7:25; 1 यूहन्ना 2:1–2)! पवित्र आत्मा धरती पर मसीहियों में अपना स्थान धारण करते हुए स्वर्ग में परमेश्वर के सामने उसकी ज़रूरतों को प्रस्तुत करता है। अतः मसीहियों के पास में स्वर्ग के न्यायालय में मसीह उनका मध्यस्थ है और पवित्र आत्मा खुद उसके मन से होकर मध्यस्थता करता है। मसीह की मध्यस्थता एक पिता द्वारा अपने परिवार के

सभी सदस्यों के लिए की जाने वाली प्रार्थना है, लेकिन पवित्र आत्मा की मध्यस्थता एक माँ की प्रार्थना के समान है जो अपने बच्चों की ज़रूरतों को पिता के सामने रखती है।

तीसरा अवलोकनः पवित्र आत्मा की कराहट लुभावने वाले शब्दों को जोड़कर बनी प्रार्थना नहीं है।

आत्मा की मध्यस्था की विषय वस्तु निश्चय ही होती है, लेकिन या तो उसे प्रगट किया या सुना जाता है या फिर बिल्कुल भी प्रगट किया या सुना नहीं जाता।

इस भाग का ग्रीक (अलालिटौस, 'लाइलो' अर्थात 'बोलना') और सीरिया या अरमेनिया का अनुवाद कहता है किः 'पवित्र आत्मा हमारे लिए स्वयं निःशब्द (अबोल, शब्दों द्वारा प्रगट नहीं किया गया, निःशब्द,शब्दों द्वारा बयान से बाहर बातें) वेदनाओं,आहों के साथ प्रार्थना करता है, *वेदना जो लुभावने शब्दों में न प्रगट होती है* और न सुनी जाती है लेकिन उन्हें साधारण शब्दों में महसूस व सुना जा सकता है।

बाइबल का लैटिन अनुवाद कहता हैःआत्मा हमारे लिए उच्चारणहीन (जिसे न बोला, न प्रगट किया और न सुना जा सके) वेदनाओं के साथ प्रार्थना करता हैः *ऐसी वेदनाएं जिन्हें न तो प्रगट किया जा सकता और न सुना जा सकता है।*

चौथा अवलोकन : आत्मा की मध्यस्थता मसीहियों की बोल या अबोल कराहट के रूप में परमेश्वर के सिंहासन तक पहुँचती हैं।

आत्मा के कराहने को मसीही जन के हृदय पर *पंजीकृत होने पर ही समझा जा सकता है,* क्योंकि परमेश्वर मसीही जन के हृदय को ही जाँचता और वहाँ ही वह उसकी निःशब्द(जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता) अकथनीय (ध्वनि रहित) कराहट प्राप्त होती है। आत्मा की मध्यस्थता अपनी अबोल और अकथनीय कराहट के द्वारा मसीहियों को अपनी प्रार्थना का औज़ार बना लेती है। *अतः कराहट या तो ध्वनि द्वारा प्रगट होती है या निःशब्द आहों द्वारा।*

अतः मसीहियों को सावधान रहना चाहिए कि कहीं वे अपनी ध्वनियुक्त व पवित्र आत्मा द्वारा ध्वनिरहित कराहट के बीच दुविधा में न पड़ें। मसीही जन जानता है कि पवित्र आत्मा उसके हृदय में परमेश्वर से उसके लिए प्रार्थना करने हेतू निःशब्द या अकथनीय कराहट या आहों का इस्तेमाल करता है, लेकिन जब वह लुभावने शब्दों, आहें भरते हुए और दूसरे प्रकार की आवाज़ों के साथ प्रार्थना करता है तो वह उन प्रार्थनाओं को आत्मा द्वारा मध्यस्थता करना नहीं कह सकता। मसीहियों को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर सदैव हमारे हृदय के लक्ष्यों और उद्देश्यों को जाँचता है (8:27; इब्रानियों 4:12–13)! रोमियों 8:26–27 बताते हैं कि किस पवित्र आत्मा मसीहियों के लिए मध्यस्था करता है न कि मसीहियों को किस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए!

पाँचवा अवलोकन : परमेश्वर जानते हैं कि आत्मा उसकी सिद्ध इच्छा के अनुसार प्रार्थना या मध्यस्थता करता है।

परमेश्वर लगातार मसीही के हृदय की जाँच करता है। वह उसके हृदय में बसी हर बात को जानता है (1 शमूएल 16:7; 1 इतिहास 28:9; यिर्मयाह 17:9–10; 1 कुरिन्थियों 4:5; इब्रानियों 4:13) और मसीहियों के लिए

पवित्र आत्मा द्वारा की जाने वाली प्रार्थना की विषय वस्तु,उसके अर्थ व मकसद को जानता है। रोमियों 8:26–27 में वचन पवित्र आत्मा द्वारा मसीहियों के लिए सेवकाई करने के बारे में बताते हैं न कि मसीही जन परमेश्वर से क्या प्रार्थना कर रहा है! मसीही कभी इस बात का दावा नहीं कर सकता कि जिन बातों को वह बेमतलब शब्दों के साथ या आहें भर के प्रार्थना कर रहा है वे पवित्र आत्मा द्वारा उसके लिए की जाने वाली प्रार्थनाएं हैं। क्योंकि पवित्र आत्मा की प्रार्थनाओं की विषय वस्तु को उस पर प्रगट नहीं किया गया।

क्योंकि पवित्र आत्मा परमेश्वर का आत्मा है और ठीक परमेश्वर के समान ही सोचता है, आत्मा की मध्यस्थता सिद्ध और प्रभावशाली होती है। वह कभी असफल नहीं होता। इसी कारण एक भी सच्चा मसीही भटकता नहीं है(8:29–30)। इसी कारण उस मसीही को कुछ नहीं होता जिसे परमेश्वर की अनुमति न मिली हो या जिसने उसके लिए परमेश्वर की सिद्ध इच्छा को पूरा करने के लिए कोई यत्न न किया हो(8:28)। मसीहियों के ह्रदय में उठने वाली ये कराहटें व आहें इस बात को दर्शाती है कि 'परमेश्वर हमारे मांगने या हमारी कल्पनाओं से ज्यादा हमारे लिए करता है' (इफिसियों 3:20)।
